RJPP, Vol. XXIII, No.II, April 25-Sept.25, ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411, Impact Factor 8.858
https://doi.org/10.31995/rjpp.2025.v23i02.027

वैश्वीकरण से संरक्षणवाद तकः अमेरिका की टैरिफ नीति और भारत की आर्थिक चुनौतियाँ

डॉ0 आकांक्षा गौर
असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीतिकशास्त्र विभाग)
आचार्य नरेंद्र देव नगर निगम
महिला महाविद्यालय, कानपुर
इमेलः aakankshasushilsingh8@gmail.com

सारांश

यह शोध–पत्र अमेरिका की टैरिफ नीति और उसके भारत पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वैश्वीकरण के युग में मुक्त व्यापार को प्रोत्साहित करने के बावजूद अमेरिका ने संरक्षणवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए स्टील, एल्युमिनियम और कृषि उत्पादों जैसे क्षेत्रों पर ऊँचे आयात शुल्क लगाए। इस नीति ने भारत के निर्यात को प्रभावित किया और द्विपक्षीय व्यापारिक संतुलन में असंतुलन उत्पन्न किया है। यद्यपि भारत ने प्रत्युत्तर टैरिफ तथा बहुपक्षीय वार्ताओं के माध्यम से अपनी स्थिति मजबूत करने का प्रयास किया, किंतु चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। यदि संरक्षणवाद जारी रहा तो दीर्घकाल में भारत–अमेरिका संबंधों में आर्थिक तनाव और बढ़ सकता है। साथ ही, यह भी स्पष्ट होता है कि भारत को अपनी व्यापारिक रणनीतियों को विविधीकृत करने और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अधिक सक्रिय भूमिका निभाने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द

टैरिफ नीति, भारत–अमेरिका व्यापार, संरक्षणवाद, वैश्वीकरण, व्यापार युद्ध, प्रत्युत्तर टैरिफ, विश्व व्यापार संगठन।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 08/09/25
Approved: 22/09/25

डॉ0 आकांक्षा गौर

वैश्वीकरण से संरक्षणवाद तकः अमेरिका की टैरिफ नीति और भारत की आर्थिक चुनौतियाँ

RJPP Apr.25-Sept.25, Vol. XXIII, No. II, Article No. 27 Pg. 207-212
Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-sept-2025-vol-xxiii-no2-261

https://doi.org/10.31995/rjpp.2025.v23i02.027

अंतरराष्ट्रीय व्यापार आधुनिक वैश्विक व्यवस्था का आधारस्तंभ है। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर 21वीं शताब्दी तक वैश्वीकरण और मुक्त व्यापार की नीतियों ने देशों के बीच परस्पर आर्थिक निर्भरता को अभूतपूर्व स्तर तक बढ़ाया है। विश्व व्यापार संगठन जैसे संस्थानों ने इस प्रक्रिया को संस्थागत रूप दिया जिससे यह धारणा मजबूत हुई कि मुक्त व्यापार से सभी देशों को लाभ मिलेगा। किंतु वास्तविकता यह है कि वैश्वीकरण के लाभ समान रूप से वितरित नहीं हुए। विकसित देशों, विशेषकर अमेरिका में यह धारणा बनी कि सस्ते आयात और आउटसोर्सिंग के कारण घरेलू उद्योग, रोजगार और उत्पादन क्षमता पर प्रतिकूल असर पड़ा है।इसलिए अमेरिका ने संरक्षणवादी रुख अपनाना प्रारंभ किया। यद्यपि संरक्षणवाद अमेरिकी इतिहास में नया नहीं है, लेकिन डोनाल्ड ट्रम्प प्रशासन (2017–2021) के दौरान "अमेरिका फर्स्ट" नीति के तहत इसे व्यापक रूप से लागू किया गया। इस नीति का मुख्य उद्देश्य घरेलू उद्योगों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाना और अमेरिकी व्यापार घाटे को कम करना था। इसके लिए अमेरिका ने अनेक देशों से आयातित वस्तुओं पर टैरिफ (Import Duties½ बढ़ाए, जिनमें स्टील, एल्युमिनियम, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, सोलर पैनल और कृषि उत्पाद शामिल थे।भारत, जो अमेरिका का एक प्रमुख व्यापारिक साझेदार है, इस नीति से विशेष रूप से प्रभावित हुआ है। अमेरिका भारत के निर्यात बाजार का महत्वपूर्ण हिस्सा है, खासकर स्टील, एल्युमिनियम, फार्मास्यूटिकल्स, आईटी सेवाएँ और कृषि उत्पादों के संदर्भ में। अमेरिकी टैरिफ नीतियों के कारण इन क्षेत्रों में भारतीय निर्यातकों को न केवल अतिरिक्त लागत वहन करनी पड़ी है, बल्कि प्रतिस्पर्धा में भी कमी आई। उदाहरणस्वरूप, 2018 में अमेरिका द्वारा स्टील और एल्युमिनियम पर क्रमशः 25% और 10% आयात शुल्क लगाए जाने से भारतीय स्टील उद्योग को भारी नुकसान उठाना पड़ा।भारत ने भी इसके प्रत्युत्तर में अमेरिका से आयात होने वाली वस्तुओं (जैसे अखरोट, सेब, बादाम, चना और कुछ औद्योगिक वस्तुएँ) पर टैरिफ बढ़ाए। यह व्यापारिक विवाद केवल आर्थिक स्तर पर ही नहीं रहा, बल्कि कूटनीतिक स्तर पर भी चर्चा का विषय बना। विश्व व्यापार संगठन में भारत ने अमेरिका की टैरिफ नीति को चुनौती दी, वहीं अमेरिका ने भारत को "विकासशील देश" की विशेष श्रेणी से बाहर कर दिया।

इस संदर्भ में अमेरिका की टैरिफ नीति और भारत पर उसके प्रभाव का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। यह विषय केवल आर्थिक विश्लेषण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें कूटनीतिक संबंधों, रणनीतिक साझेदारी, अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक अर्थशास्त्र और वैश्वीकरण की चुनौतियों का भी समावेश है। विशेषकर वर्तमान समय में, जब अमेरिका–चीन व्यापार युद्ध और रूस–यूक्रेन युद्ध जैसे घटनाक्रमों ने वैश्विक व्यापार व्यवस्था को अस्थिर कर दिया है, ऐसे में भारत जैसे उभरते हुए अर्थतंत्र के लिए अमेरिका की नीतियों का प्रभाव और भी गंभीर हो जाता है।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य अमेरिका की टैरिफ नीति के भारत पर पड़ने वाले प्रभावों का बहुआयामी विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत अमेरिका की संरक्षणवादी नीतियों की पृष्ठभूमि और कारणों को समझना, भारत–अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार पर टैरिफ नीति के प्रभावों का मूल्यांकन करना तथा भारतीय निर्यात और आयात संरचना में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना षामिल है। साथ ही, यह शोध भारत द्वारा अपनाई गई प्रत्युत्तर नीतियों, विश्व व्यापार संगठन में इसकी स्थिति तथा भविष्य मंन भारत–अमेरिका व्यापारिक संबंधों की संभावनाओं और चुनौतियों का आकलन भी करेगा।

अमेरिकी टैरिफ नीति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अमेरिका का इतिहास इस बात का गवाह है कि वहाँ की सरकार समय–समय पर घरेलू उद्योगों को बचाने के लिए टैरिफ और शुल्क बढ़ाती रही है। 19वीं शताब्दी में जब अमेरिकी उद्योग धीरे–धीरे खड़े हो रहे थे, तब ब्रिटेन और यूरोप से आने वाले सस्ते उत्पादों से प्रतिस्पर्धा कठिन हो जाती थी। ऐसे समय में अमेरिका ने ऊँचे आयात शुल्क लगाकर अपने उद्योगों को संरक्षण दिया ताकि वे विकसित हो सके और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सके। 20वीं शताब्दी के मध्य तक अमेरिका ने संरक्षणवाद और उदारवाद, दोनों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश की। लेकिन 1990 के दशक में जब वैश्वीकरण का दौर तेज हुआ और विश्व व्यापार संगठन (WTO) का गठन हुआ, तब अमेरिका ने अपेक्षाकृत उदार नीति अपनाई। इसके बावजूद, अमेरिका के भीतर एक धारणा बनी रही कि सस्ते आयातों और आउटसोर्सिंग के कारण अमेरिकी नौकरियाँ खत्म हो रही हैं। यही असंतोष समय–समय पर राजनीतिक दबाव बनाकर संरक्षणवादी नीतियों को वापस लाता रहा।

ट्रम्प युग और "अमेरिका फर्स्ट" नीति

2017 में डोनाल्ड ट्रम्प के राष्ट्रपति बनने के बाद यह असंतोष औपचारिक नीति में बदल गया। ट्रम्प ने "अमेरिका फर्स्ट" का नारा दिया और साफ कहा कि अगर अन्य देश अमेरिकी उद्योग और श्रमिकों को नुकसान पहुँचाते हैं तो अमेरिका भी वैसा ही करेगा। इस सोच के तहत अमेरिका ने चीन, यूरोपीय संघ, कनाडा, मैक्सिको और भारत जैसे बड़े व्यापारिक साझेदारों पर टैरिफ बढ़ाए। 2018 में ट्रम्प प्रशासन ने स्टील पर 25 प्रतिशत और एल्युमिनियम पर 10 प्रतिशत आयात शुल्क लगा दिया। भारत जैसे देशों के लिए यह बड़ा झटका था क्योंकि अमेरिका भारतीय स्टील और एल्युमिनियम के निर्यात का बड़ा बाजार था। इसके बाद अमेरिका ने भारत को जनरलाइज्ड सिस्टम ऑफ प्रेफरेंसेस (GSP) से बाहर कर दिया। इस फैसले से भारत के लगभग 5.6 अरब डॉलर मूल्य के निर्यात पर मिलने वाली रियायत खत्म हो गई। यह भारतीय निर्यातकों के लिए सीधी हानि थी। वैश्वीकरण के युग में जहाँ मुक्त व्यापार को बढ़ावा देने की बात होती है, वहीं अमेरिका ने "अमेरिका फर्स्ट" नीति के तहत संरक्षणवादी रुख अपनाया। 2018 में स्टील पर 25% और एल्युमिनियम पर 10: टैरिफ लगाने का निर्णय इसी दिशा में उठाया गया कदम था। इसका सीधा असर भारत सहित उन देशों पर पड़ा जिनका अमेरिका को निर्यात महत्त्वपूर्ण था। विश्व व्यापार संगठन विश्व व्यापार संगठन (2019) की रिपोर्ट के अनुसार, इन टैरिफों के कारण भारत के स्टील निर्यात में लगभग 30: की गिरावट दर्ज की गई।भारत और अमेरिका के बीच व्यापारिक रिश्ते पिछले दो दशकों में बहुत गहरे हुए है। 2001 में जहाँ दोनों देशों का व्यापार केवल 20 अरब डॉलर था, वहीं 2019 तक यह 146 अरब डॉलर तक पहुँच गया। अमेरिका आज भारत का सबसे बड़ा निर्यात बाजार है। भारत से अमेरिका को मुख्य रूप से आईटी सेवाएँ, दवाइयाँ, वस्त्र, कृषि उत्पाद और स्टील–एल्युमिनियम का निर्यात होता है। बदले में भारत अमेरिका से विमान, रक्षा उपकरण, पेट्रोलियम, उच्च तकनीक और कृषि उत्पाद आयात करता है। यानी व्यापारिक संबंध इतने गहरे हो चुके थे कि किसी भी टैरिफ नीति का सीधा असर दोनों अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ना स्वाभाविक था।

भारतीय निर्यात पर अमेरिकी टैरिफ नीति का असर

(क) स्टील और एल्युमिनियम उद्योग

अमेरिका के टैरिफ ने भारतीय स्टील और एल्युमिनियम निर्यातकों को सबसे पहले प्रभावित किया। भारत अमेरिका को सालाना लगभग 2.6 अरब डॉलर का स्टील बेचता था। 25% शुल्क लगने के बाद यह व्यापार घाटा में बदल गया। भारतीय कंपनियों को या तो अपने उत्पाद महँगे दाम पर बेचने पड़े या फिर अन्य बाजार तलाशने पड़े। जिससे उनकी प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता घटी और उत्पादन पर भी असर पड़ा।

(ख) कृषि उत्पाद

भारतीय कृषि निर्यात को भी झटका लगा। अमेरिका ने भारत से आने वाले कई उत्पादों पर सख्त मानक और शुल्क लगाए। जिससे आम, मसाले और दाल जैसे उत्पादों की आपूर्ति बाधित हुई। जब अमेरिका ने भारतीय उत्पादों को रोकना शुरू किया, तब भारत ने जवाबी कार्रवाई में अमेरिकी कृषि उत्पादों जैसे अखरोट, बादाम और सेब पर टैरिफ बढ़ा दिया। इससे दोनों देशों के किसानों और व्यापारियों को नुकसान हुआ।

(ग) आईटी और सेवाएँ

हालाँकि टैरिफ मुख्य रूप से वस्तुओं पर था, लेकिन सेवाओं पर भी इसका असर दिखा। अमेरिका ने 1 वीजा की शर्तें कड़ी कर दीं। भारतीय आईटी कंपनियाँ जो अमेरिका में काम कर रही थीं, उन्हें अपने कर्मचारियों को भेजने में दिक्कत आई। अमेरिका भारतीय आईटी सेवाओं का सबसे बड़ा ग्राहक है, ऐसे में यह नीति भारतीय कंपनियों के लिए चिंता का विषय बनी। 2023 में अमेरिका को भारत की सेवाओं का निर्यात लगभग +150 बिलियन रहा।अमेरिकी कंपनियों का भारत में FDI 2023 में +16.6 बिलियन तक पहुँचा।

(घ) फार्मास्यूटिकल्स

भारत की दवा कंपनियाँ अमेरिकी बाजार पर बहुत निर्भर हैं। इन पर सीधे टैरिफ तो नहीं लगाया गया, लेकिन गुणवत्ता और पेटेंट मानकों को कठोर बनाकर अमेरिका ने दबाव बढ़ाया। इससे भारतीय दवा उद्योग को अपनी लागत बढ़ानी पड़ी।

भारत ने अमेरिकी टैरिफ नीति के विरोध में प्रतिक्रिया स्वरूप अमेरिका से आयातित 28 उत्पादों पर शुल्क बढ़ा दिया।साथ ही भारत ने विश्व व्यापार संगठन में अमेरिका की नीतियों को नियम–विरोधी बताते हुए शिकायत भी की। अब भारत यूरोप, जापान, आसियान और अफ्रीका के साथ व्यापार बढ़ाने पर जोर दे रहा है ताकि अमेरिका पर निर्भरता घटे। टैरिफ के मुद्दे को लेकर भारत और अमेरिका के बीच कई दौर की बातचीत हुई है। कुछ मामलों में समझौते भी हुए लेकिन अधिकांश विवाद बने हुए है।

विश्व व्यापार संगठन और वैश्विक व्यापार व्यवस्था पर प्रभाव

अमेरिका की टैरिफ नीति केवल द्विपक्षीय विवाद नहीं थी। उसने पूरे वैश्विक व्यापार ढाँचे को हिला दिया। अमेरिका ने विश्व व्यापार संगठन के नियमों को दरकिनार करके "राष्ट्रीय सुरक्षा" का हवाला देकर शुल्क लगाया। इससे विश्व व्यापार संगठन की विश्वसनीयता पर सवाल उठे। भारत

जैसे विकासशील देशों के लिए यह स्थिति कठिन थी क्योंकि वे अपने हक की रक्षा के लिए पर निर्भर रहते हैं। जब बड़े देश ही नियम तोड़ने लगें तो छोटे देशों की स्थिति कमजोर होना स्वाभाविक है।

सुझाव

1. भारत को यह समझ लेना चाहिए कि किसी एक देश पर अत्यधिक निर्भरता जोखिमपूर्ण है। इसलिए निर्यात बाजारों का विविधिकरण जरूरी है। यूरोप, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और आसियान देशों के साथ व्यापार को मजबूत करना चाहिए ताकि अमेरिका जैसी नीतियों का असर सीमित हो सके।
2. भारत को अपने उद्योगों की गुणवत्ता, तकनीक और उत्पादकता में सुधार करना होगा। स्टील और एल्युमिनियम उद्योग को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाना होगा। आईटी और फार्मा कंपनियों को शोध और नवाचार में अधिक निवेश करना चाहिए ताकि वे अमेरिकी नियमों और मानकों को आसानी से पूरा कर सकें।
3. भारत को WTO और अन्य बहुपक्षीय मंचों पर सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। अमेरिका जैसे बड़े देशों के संरक्षणवाद को चुनौती देने के लिए विकासशील देशों का साझा मोर्चा बनाना आवश्यक है। भारत इस नेतृत्व की भूमिका निभा सकता है।
4. भारत को अमेरिका के साथ लगातार संवाद बनाए रखना चाहिए। टैरिफ विवादों को सुलझाने के लिए द्विपक्षीय वार्ता और समझौते उपयोगी हो सकते हैं। व्यापारिक संबंधों में लचीलापन दिखाना कभी–कभी बड़े कूटनीतिक लाभ दिला सकता है।
5. कृषि उत्पादों पर टैरिफ विवाद से किसानों को नुकसान होता है। भारत और अमेरिका दोनों को ऐसे क्षेत्रों में सहकारिता बढ़ानी चाहिए। संयुक्त अनुसंधान, खाद्य प्रसंस्करण और आपूर्ति श्रृंखला सुधार से दोनों देशों को लाभ हो सकता है।
6. अमेरिका और भारत दोनों ही तकनीकी महाशक्ति बनने की दौड़ में हैं। अगर दोनों देश मिलकर काम करें तो न केवल व्यापार विवाद कम होंगे बल्कि नए अवसर भी पैदा होंगे। सेमीकंडक्टर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ग्रीन टेक्नोलॉजी में साझेदारी भविष्य का रास्ता है।
7. भारत को आत्मनिर्भर भारत अभियान को केवल घरेलू खपत तक सीमित नहीं रखना चाहिए। इसे वैश्विक रणनीति से जोड़ना होगा। यानी भारत ऐसे उत्पाद और सेवाएँ विकसित करे जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकें। इससे अमेरिका जैसी नीतियों का असर सीमित हो जाएगा।साथ ही आसियान, अफ्रीका और यूरोपीय संघ के साथ मजबूत संबंध विकसित करके निर्यात के ठिकानों में विविधता लाए। रूपए और रूबल में व्यापार का विस्तार करे और ऐसी वैकल्पिक वित्तीय व्यवस्थाएं विकसित करे, जो डॉलर पर कम निर्भर हों।
8. घरेलू सुधार करके भारत अपने आपको वैश्विक आपूर्ति श्रंष्खलाओं में चीन के बेहतर विकल्प के तौर पर पेश करे।हिंद प्रषांत आर्थिक रूप–रेखा (IPEF) जैसे व्यापारिक गठबंधनों को मजबूत करे और उन बहुपक्षीय मंचों से दोबारा जुड़े, जहां अब तक भारत हाशिए पर ही रहा है।

अमेरिका की टैरिफ नीति ने यह दिखा दिया कि वैश्वीकरण के इस दौर में भी राष्ट्र अपने हितों को सर्वोपरि रखते हैं। भारत को इस सच्चाई को स्वीकार करना होगा और अपनी रणनीति इस तरह बनानी होगी कि किसी एक देश की नीति उस पर अत्यधिक असर न डाल सके।अमेरिका की

टैरिफ नीति से यह स्पष्ट होता है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में चाहे कितनी भी मुक्त व्यापार की बातें हों, परंतु जब किसी राष्ट्र के घरेलू हितों पर खतरा महसूस होता है, तो वह राष्ट्र संरक्षणवादी रुख अपनाने में पीछे नहीं हटता। अमेरिका, जो दशकों तक वैश्वीकरण और मुक्त व्यापार का सबसे बड़ा समर्थक रहा, उसने भी "अमेरिका फर्स्ट" के नाम पर ऊँचे टैरिफ लगाकर यह दिखा दिया कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों मंव आर्थिक हित सबसे पहले आते हैं।भविष्य की दृष्टि से यदि देखा जाए तो भारत और अमेरिका दोनों ही एक–दूसरे के लिए अपरिहार्य साझेदार हैं। अमेरिका को एशिया में संतुलन के लिए भारत की आवश्यकता है, वहीं भारत को तकनीक, निवेश और बाजार के लिए अमेरिका की जरूरत है। इसलिए यह मान लेना गलत होगा कि टैरिफ विवाद से दोनों देशों के रिश्ते टूट जाएंगे। बल्कि यह एक संकेत है कि आर्थिक मोर्चे पर सावधानी और रणनीति की आवश्यकता है। भारत को चाहिए कि वह अल्पकालिक तनावों से विचलित न हो, बल्कि दीर्घकालिक दृष्टि रखे। वैश्वीकरण भले ही धीमा हो रहा हो, पर पूरी तरह से रुकना संभव नहीं है। ऐसे में भारत का लक्ष्य यह होना चाहिए कि वह नए वैश्विक आर्थिक ढाँचे में अपने लिए मजबूत और सुरक्षित स्थान बना सके।अमेरिका की टैरिफ नीति ने भारत को यह सिखाया है कि वैश्विक राजनीति में कोई भी देश स्थायी मित्र या स्थायी शत्रु नहीं होता, केवल हित स्थायी होते हैं। भारत को अपनी नीति इसी समझ के आधार पर बनानी होगी। यदि भारत विविधिकरण, नवाचार और बहुपक्षीय सहयोग की दिशा में आगे बढ़ता है, तो अमेरिकी टैरिफ नीतियाँ केवल अस्थायी चुनौती बनकर रह जाएँगी, न कि स्थायी बाधा।

संदर्भ

1. भगवती, जे. (2004). वैश्वीकरण और स्वतंत्रताः मुक्त व्यापार का भविष्य. नई दिल्लीः पेंगुइन बुक्स इंडिया.
2. कुमार, एस. (2019). अमेरिका भारत व्यापार संबंध : अवसर और चुनौतियाँ. अंतरराष्ट्रीय अध्ययन पत्रिका, 56(3), 215–232. https://doi-org/10-1177/002088171986000
3. विश्व व्यापार संगठन (WTO). (2018). वार्षिक रिपोर्ट 2018 : व्यापार और विकास. जेनेवाः WTO प्रकाशन.
4. चतुर्वेदी, आर. (2020). वैश्विक व्यापार युद्ध और भारत की रणनीति. भारतीय आर्थिक समीक्षा, 75(2), 101–119.
5. Government of India- (2020)- India–US Trade Statistics 2019&20- Ministry of Commerce and Industry- https://commerce&app-gov-in
6. Office of the United States Trade Representative (USTR)- (2019)- 2019 National Trade Estimate Report on Foreign Trade Barriers- Washington, DC: USTR.
7. Economic Times- (2018, June 20)- India hits back with retaliatory tariffs on 28 US products- https://economictimes-indiatimes-com
8. Joshi, V- (2021)- US Protectionism and Its Impact on India- New Delhi : Oxford University Press.
9. Panagariya, A. (2020). India's Trade Policy Dilemma and the Role of the United States- Journal of International Trade and Development] 29(4), Pg. 401–425- https://doi-org/10-1080/09638199-2020-1735627